

॥ निश्यामालका ॥ वैष्णवीया ॥ गनस्तनीयानि तु गनराजसुतका. सहिनपंकजसुखिनवयो
 वनाया ॥ भस्वतिचक्रगदया कित्वा न हस्तो. श्रीवैष्णवीसुतनगासि सदाप्रसन्ना ॥ भस्वचक्रम
 नरुनं कलुगनयस्यागदादेशहा चर्चाकृष्ण उक्तं गनस्तनिकनेर्ववधमा लोकायन ॥ ताहस्तु नव
 मघवधमदयावि ॥ भस्वचक्रवी. तादवीसुतनमानिभिन्नसाविध्वननायापिनी ॥ वैष्णवीवि
 द्वायाच. देशदृष्टकनाभिनी ॥ हनिग ४ ॥ भस्वचक्रगी. गनराजपानि संस्किता ॥ भस्वचक्रगदाह
 स्तो च उवाच विदुषिता ॥ नस्तका ला विचित्राणी. नानाहृदयविदुषिता ॥ हनिपूष्यं च गंधं. सदाह
 निगधति ॥ स्वर्गमर्थचपाताल. स्कितिरूपसंस्किता ॥ अहहासमहादृष्ट. कदम्बदृष्टवा
 सिनी ॥ नमयसंस्कितापी २०. नानायधीनमा मुने ॥ भस्वस्थामावालिथासुति ॥ श्रीसुम्वर्श
 ॥ कसामुनि ॥ त्वमातापितनस्तुमति ॥ अपमाधसहस्राणीति ॥ पूर्ववत्वाधत ॥ भूगन्धि

ये १०७१० व ५

वयत्

दि॥ ॥समयकाय॥नमस्कानयाय॥ ॥इकाय दत्ता दत्ता नोत्तमं थका गिन की नत-जा की न
पिया लंषधान थया वद वया थसुहय॥तत ४ प ७ जागं ॥ख प्र पूजा॥ख प्र प्रहा ल्या॥चन्दना
दिह प्रधं॥जैं अ कालि २ वं अ भिनि लोह द ७ अ यत म ४॥जैं अ उमा महं भव नायन म ४॥जैं अ प्रहा
वि प्र महं भव नाय भि व भि कि सुहिता य ख जादि म ७ वासा यन म ४॥स्त्राय॥जैं अ ख जा य ख
लुना भय भि कि कार्या य त त्य न ४॥प ७ ७ दत्त या भि घं ख प्र नाथ त म लु न ॥ ॥तत ४ सु लु द
अ प ७ द व्या य सुं स्का प्य॥अर्धाद के न प्रो क्थं॥क व च ना गुं ० न ॥२ ध व म् प्रान्ति क स्य॥जां ह
दया दि पूजा॥चन्दना दिह प्रधं॥प ७ क र्क म क्रु प १० त॥जैं ७ प ७ प्रा भय वि प्र ह वि भ्य क
म १६ धी म ही न नो जी व प्र वा द या ता॥पूत ना म्ना म क्रु ४॥जैं ७ ७ पा प ह क स्य स्या हा॥ध
पदी प॥ज ल म क्रु ७ अ द गं गृही त्वा॥ॐ अया दि॥का भ्य प १ ग ५ म् अ म् क ना म अ म् म दा दी

नां स०॥ किं कपनि वानरुपं वा स० यथा स० का कथुरुल प्राप्स्यर्थं श्रीमन्त्रि ०० ददवतादी
वैष्णवी देव ०० दं वक्रि देव तं का गप ०० उल्य महं घा ०० यि ०॥ प ०० गे का मिद वं सि प्रलया मप
या चितं ॥ मस्यापि स्वर्ग संप्राप्तं च छि के त्वे प्रयं कृम ॥ पूर्व जन्म कृतं पापा ल्य ०० जन्म निजा यत
॥ सर्व पाप विनिर्मुक्तं स्वर्ग लोकं सग कति ॥ जै ०० च छि के चा म छि के म हा का लि म हा मा य
म ०० र्ग का श्या य धी म म श्री पु न्ने व च न न ०० दं म हि प्र का ग क कृ पा दि कं प ०० पू जा त प्यं ०० द्यं
उत्साहा ॥ प ०० यानि प्र सु ता ति पू जा हा मा दि के म लि ॥ उ वा ए व उ सा द वी स मां स नू धि गे कृ व ॥ ॥ द
उ म हा य के म कृ ०॥ जै ०० जौं जी का गाय जौं जी रु द्दं स्वा हा ॥ वै ०० जौं जी थ क र जौं जी रु द्दं स्वा हा ॥ ॥ ००
ति प ०० ॥ म ध न ॥ ॥ म हा ल ना स त्या य ॥ श्री स न्च गा वा नं ॥ स न य का य द कि धा का य स क ल या तं द व का प
क ॥ ॥ मा हा मा या प ०० ॥ ॥ त न ०० वा क न स हि त द व त प्यं ०० य ॥ न न्दं उ क ल या गि न्या दि ॥ विं द ॥ ००

निवलि विधत्त ॥ ॥ माहनि सुठ न वि सुठ न ॥ पिथ पूजा ॥ ॥ स्वान का काय ॥ नाना य य या कं ॥ येष्म वी या कं
दवा भि वा द ॥ ॥ जे ज प्र का न ति ॥ ॥ आ ला र्थ ॥ अर्घ पा जा द क ना ला ति र्व कं का न य त ॥ ॐ दु का ना ति ॥ ॥ च त ॥
च न द नं त्र पा तं प र्थ ति ॥ ॥ सिं दू त ॥ सिं दू तं भि न सा ध र्थ ति ॥ ॥ मा ह ती ॥ ॐ द्रा वी ॐ ह सा सु न ति ॥ ॥ सु ठ
॥ ॥ सिं दार्थ द भि पा व कं च ति ॥ ॥ स्वा न ॥ ॐ ज म्भ प र्व ग त ति ॥ ॥ ॐ ति आ ला ध क ॥ ॥ थ त सिं क
ल म्भ का य ॥ ॐ धी ल क्री द व द वी च स र्व संप क्रि दा यि नी ॥ स र्व का म प्र दा द वी न म स्ता ह्या न मा न म ॥
कं त छा व मि सा थ का ठि न की न न चा ति क ल त ये ॥ ॐ न म ॥ ॥ सिं दू तं भि न सा ध र्थ ॥ स्वा मि ना दी र्घ
जी व त ॥ ध न सं ता न का मा र्थ ॥ व र्द्ध ता ॥ मं ग ला य च ॥ ॐ ति चा ति क ल क्का य ॥ ॥ स म यं ॥ ॐ ज म्भ
स्व ॥ ॐ क ल म्भ न न्द ति ॥ ॐ ति स म यं ॥ ॥ त र्प यं ॥ ॐ ज प्री ति प्र ता स त स्का ति ॥ वा ष्प प र्व व त ॥ धी
म त् कुं क्षु द व ता प्र ति वा र्षि क क्का ग व लि स हि त स्त र्का ती पू ष्या व ना ह न पू जा संप र्क र्थ

[illegible]

स्त्रीपिथी॥ मातंगमातंगिनीदेवी निर्मा ल्यस्तु स्वस्ती॥ ध्यानपुष्पं नमः॥ आवाहना
दिशं कलि॥ जे० उ० पु० ॥ सिद्धिमातंग भूनायमू॥ ॐ सिद्धिमातंग भूनायमू॥ ॐ सिद्धिमातंग भूनायमू॥ ॐ सिद्धिमातंग भूनायमू॥
॥ ३॥ प्रकोषवामभुं ॥ ॥ जे० उ० पु० ॥ सिद्धिमातंग भूनायमू॥ ॥ दक्षिणभुं ॥ ॥ जे० उ० पु० ॥ सिद्धिमातंग भूनायमू॥
पाप॥ भूयभुं ॥ ॥ जे० उ० पु० ॥ सिद्धिमातंग भूनायमू॥ ॥ भूयभुं ॥ ॥ जे० उ० पु० ॥ सिद्धिमातंग भूनायमू॥
पाप॥ जे० उ० पु० ॥ सिद्धिमातंग भूनायमू॥ ॥ जे० उ० पु० ॥ सिद्धिमातंग भूनायमू॥ ॥ जे० उ० पु० ॥ सिद्धिमातंग भूनायमू॥
मातंग भूनायमू॥ ॥ जे० उ० पु० ॥ सिद्धिमातंग भूनायमू॥ ॥ जे० उ० पु० ॥ सिद्धिमातंग भूनायमू॥ ॥ जे० उ० पु० ॥ सिद्धिमातंग भूनायमू॥
जे० उ० पु० ॥ सिद्धिमातंग भूनायमू॥ ॥ जे० उ० पु० ॥ सिद्धिमातंग भूनायमू॥ ॥ जे० उ० पु० ॥ सिद्धिमातंग भूनायमू॥ ॥ जे० उ० पु० ॥ सिद्धिमातंग भूनायमू॥
हृत्पाप॥ जे० उ० पु० ॥ सिद्धिमातंग भूनायमू॥ ॥ जे० उ० पु० ॥ सिद्धिमातंग भूनायमू॥ ॥ जे० उ० पु० ॥ सिद्धिमातंग भूनायमू॥ ॥ जे० उ० पु० ॥ सिद्धिमातंग भूनायमू॥
॥ ॥ जे० उ० पु० ॥ सिद्धिमातंग भूनायमू॥ ॥ जे० उ० पु० ॥ सिद्धिमातंग भूनायमू॥ ॥ जे० उ० पु० ॥ सिद्धिमातंग भूनायमू॥ ॥ जे० उ० पु० ॥ सिद्धिमातंग भूनायमू॥

ॐ॥ जैशंभुवाये नमः॥ जैशंभुने नमः॥ जैशंभुनाय नमः॥ जैशंभुलकाय नमः॥
पाप॥ ॥ पूर्वाय नमः॥ कं किनीप विग्रहो नमः॥ वलि॥ खड्गमावा स्र-
हानमः॥ ॥ धूप दीप॥ जप॥ स्तुति॥ क्रमाहं दीपदहंगलितनूचिकटं प्रि-
तिनप्रकला लं-
हलखं चक्रं नदपनविष्टं नान्द्रुलं कपालं॥ चक्राकमस्य मांसासवनस्य विविधि-
मादितं प्रतसंस्क-मातं गभीतं च स्वगभ्यापोगतं नो मिडच्छिष्टनाथं नमस्कृतं॥ रुलगा-
नूनादि मखं शुद्धि॥ मखाच्छिष्टं दद्यात्॥ ॥ मकुशं जैशंभुं नमो गवती कालिका सिद्धिहे-
वी चाम॥ ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं स्वाहा॥ ॥ देवा सिर्वादा॥ प्रकानक॥ मधु लयास्वानं कृप॥ न्या-
सलीन॥ संहानमद्राधविस्तर्जन॥ ॥ श्रुति कलं खपूजा॥ ॥ ॥ ॥ यद्रूपं न च उर्थि
श्रीकाटना कहेन वपूजा॥ ॥ आचमन॥ जलधन॥ जलस्नान॥ तिर्थधन॥ श्रुतिस्नान

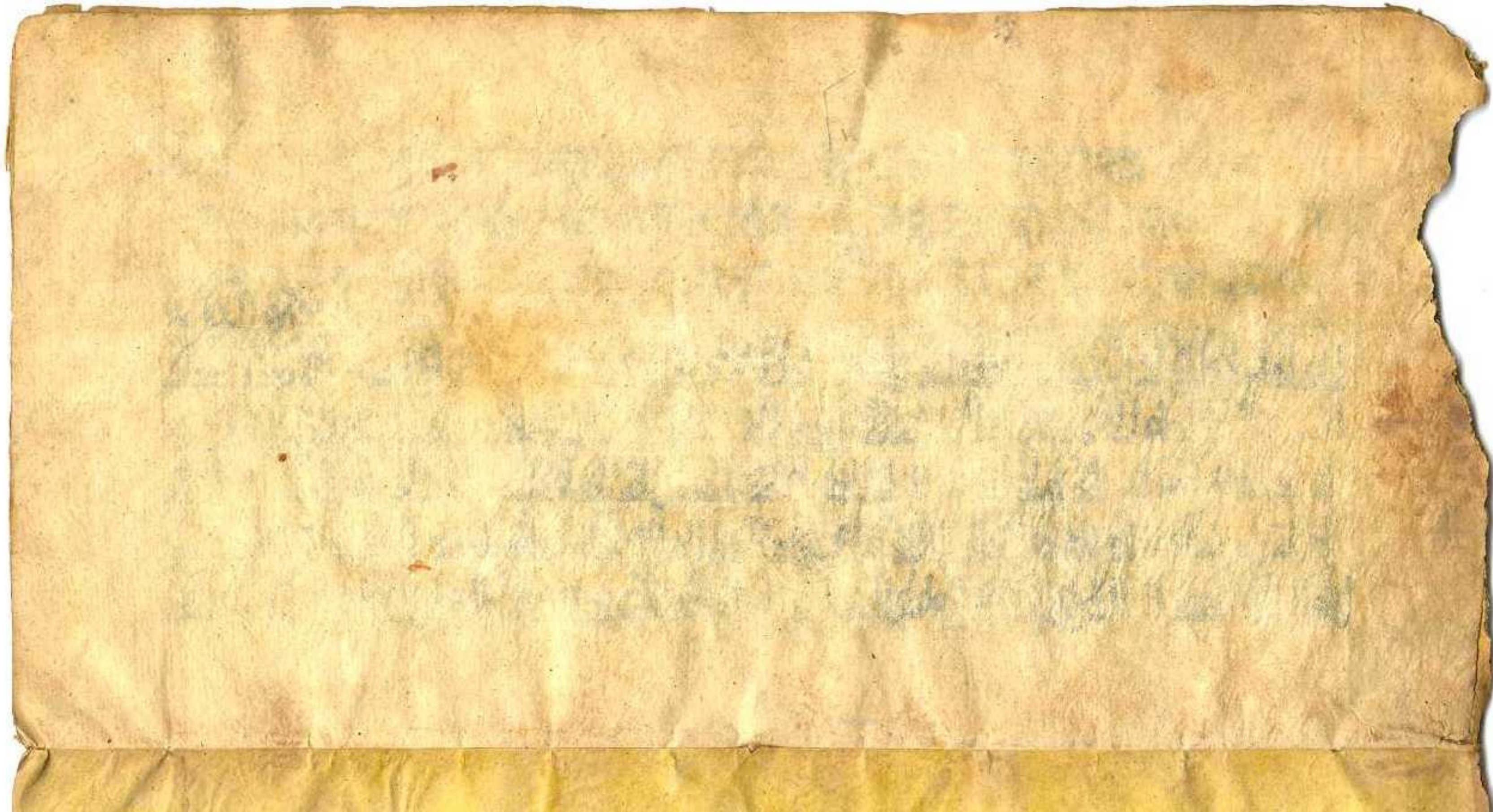
पूजकलस्नान. चंदन. सिंदूर. अरुण. कुंजका. स्नानकाय. पातासनचाय. गायहोले ॥ ॥
ततः पूजनं ॥ नासिय ॥ सूर्यार्घ्य ॥ ॐ नमो भगवते ॥ काभ्यपराय प्रभुमूकताम असुदादीनां सभ
कि कपनिवान कुरुवाभं यथामभक्तु कुरुलुलाप्रक्य र्थं श्री ॐ वृद्धवता प्रणिवार्षिक स्वर्क
जाती पूष्यावनाहन पूजाया चतुर्थिकर्म लि धीकाटनो कुरुनवावृद्धवता चनकागवलित
हित पूजा कुरुं धी सूर्यार्घ्य २॥ पूष्यं नमः ॥ उन्नतमस्तान ॥ आसन. लाहले. वक्रमकटमूत्रा. द
भवागवन्धन ॥ गण गुन्नतमस्तान ॥ प्राप्तायाम ॥ न्यास ॥ जलाघपाय पूजा ॥ रुतभुध
स पूजा ॥ माहनी रुय ॥ रुयादि पूजा ॥ मालिनिप १० ॥ पंचवल्यादि ॥ समय काय ॥ श्री स
न्धु ॥ प्रदवादि. निर्वाधतं पूजा ॥ ॥ अथ वि १॥ अथ न्यास ॥ जैशंको कुरुयादिन्यास ॥ ॥
आसन ॥ जैशंको अथ न्यास ॥ जैशंको कुरुयादिन्यास ॥ ॥ ध्यान ॥ ॐ कल्याणकवक्तिवपुषं प्रल

यान्दनिष्कषं॥ तज्जित्पुंजनिहेड्ये. ऊटिहिकनकप्रहं॥ चन्द्रसूर्याग्निनयनं. काटना
कंसलीषधं॥ वृहद्वक्त्रकलाहाग. नागयक्षापवीतकं॥ ह्यूनस्त्रासिष्कमूकटं. सूर्यक
धुल्लुषितं॥ सूर्यहानकटापं. सूर्यकंकलनूपनं॥ सिंहचर्मपत्रीधातं. सूर्यमखल
मण्डितं॥ गजचर्मवृत्तंतीमं. भभभ्रुवृत्तरभषनं॥ पंचवक्त्रं भवानरुं. दभवाकृद्विलाचनं॥
कपालमालाहनुसं. खड्गहृदकधनिषं॥ पाभं कभधनंदवं. भनभ्रभ्रवधनिषं॥ क
पालखड्गांगधनं. वनदाहयपाधितं॥ लिन्नांजनप्रतीकाभं. ह्यूनताधनतासुनं॥ प्रक्ष
त्रविष्कवनदं. प्रिदभषपिइअतं॥ जगत्कृतं नवरूपं. स्वकन्दं पनिकीर्तितं॥ ध्वन
पूष्यंतम॥ ॥ श्रावाहनादिपाशादि॥ अंजलि॥ विजोधीधुं. को. जो. जो. ई. को. को. ई.
सु. श्री. का. ज्ना. क. महा. ते. न. वा. य. क. य. पा. ला. य. अ. अ. लि. पू. ३॥ वलि॥

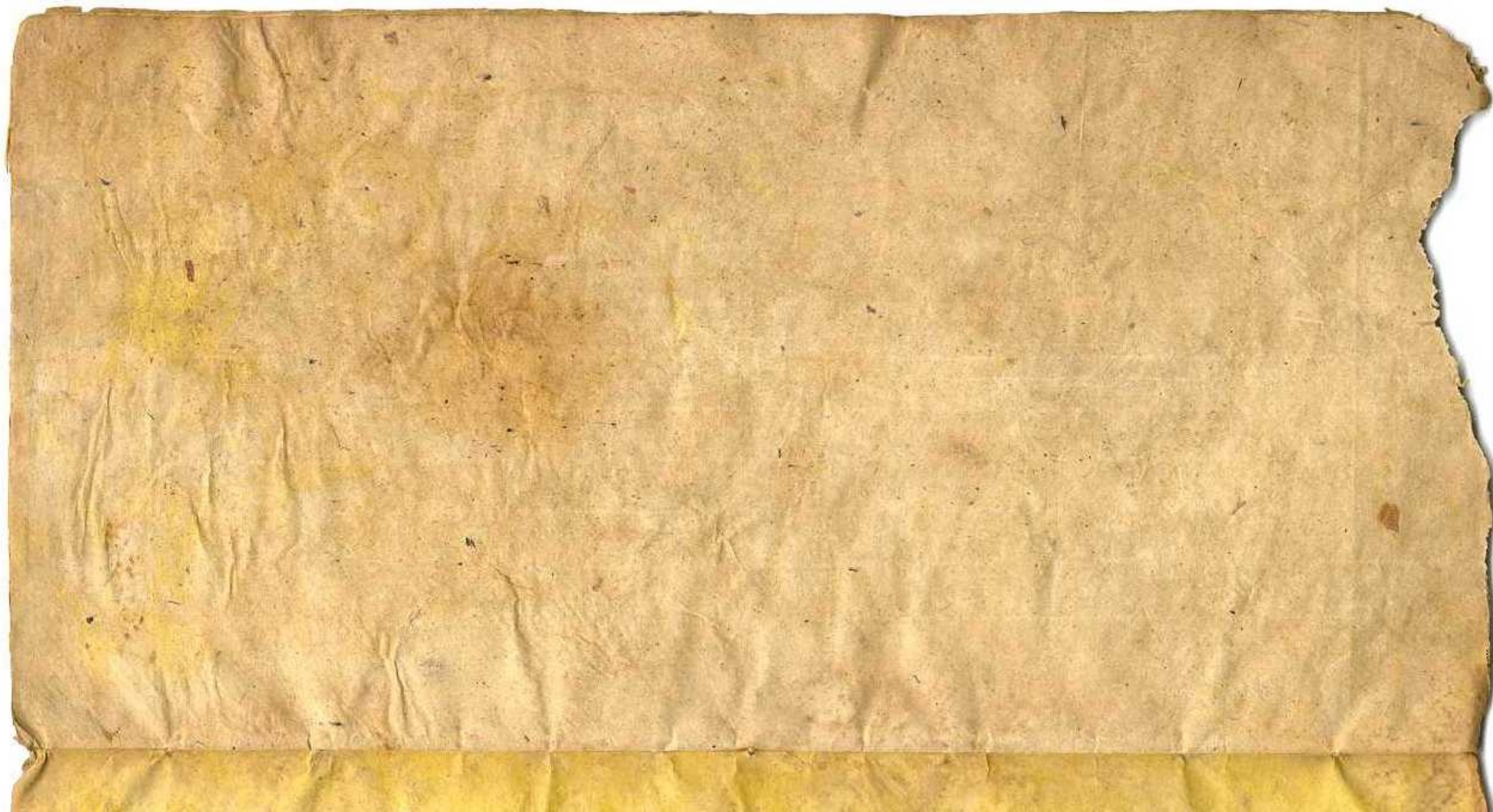
३॥

[illegible]

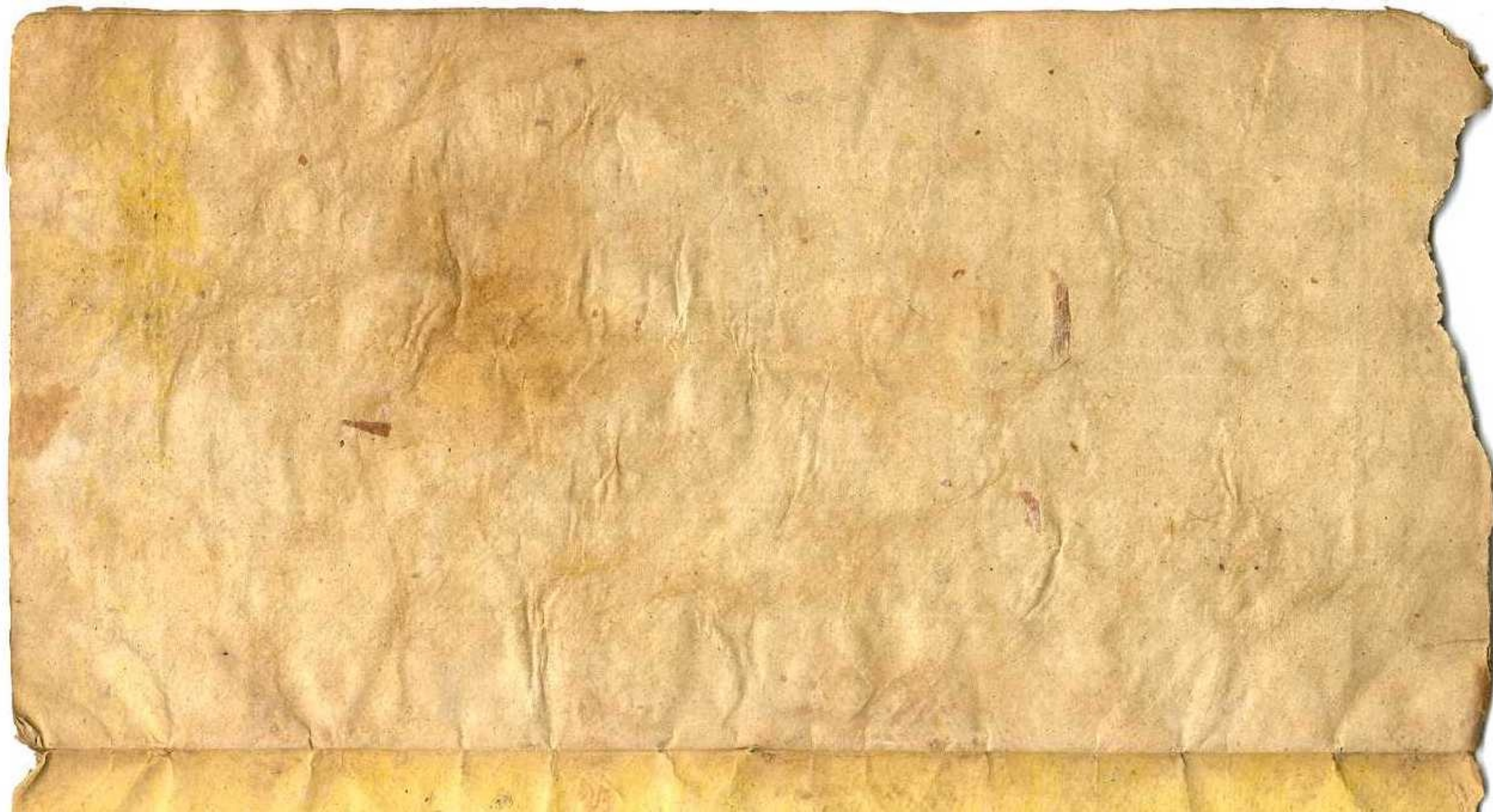
लिखिंदू॥ ॥ ज्ञयादि॥ ॥ नृपचक्रादि॥ ॥ हं उकादि॥ ॥ वलिखिंदू॥ ॥ इत्यादि॥ श्री
देवकी॥ श्रीचक्रहेनवा॥ श्रीबालकौमानि॥ सउधपूजा॥ ॥ वलिमास॥ धूप-दीप-न
वय-रुल-रुल-नर्प-नान्द-प्रगिष्ठा-रूप-साय॥ ॥ रव-रूप-पञ्च-अधन-न
प्य-माहामाया-वाकन-छाय-सउध-माहनी-छाय-विधि-पूजा-धन-॥ ॥
सुन्दर-१८-सूचिक-वदि-नो-१८-धूप-देव-रामना-गाय-न-वाय-धन-का
रुल॥ ॥ श्री॥



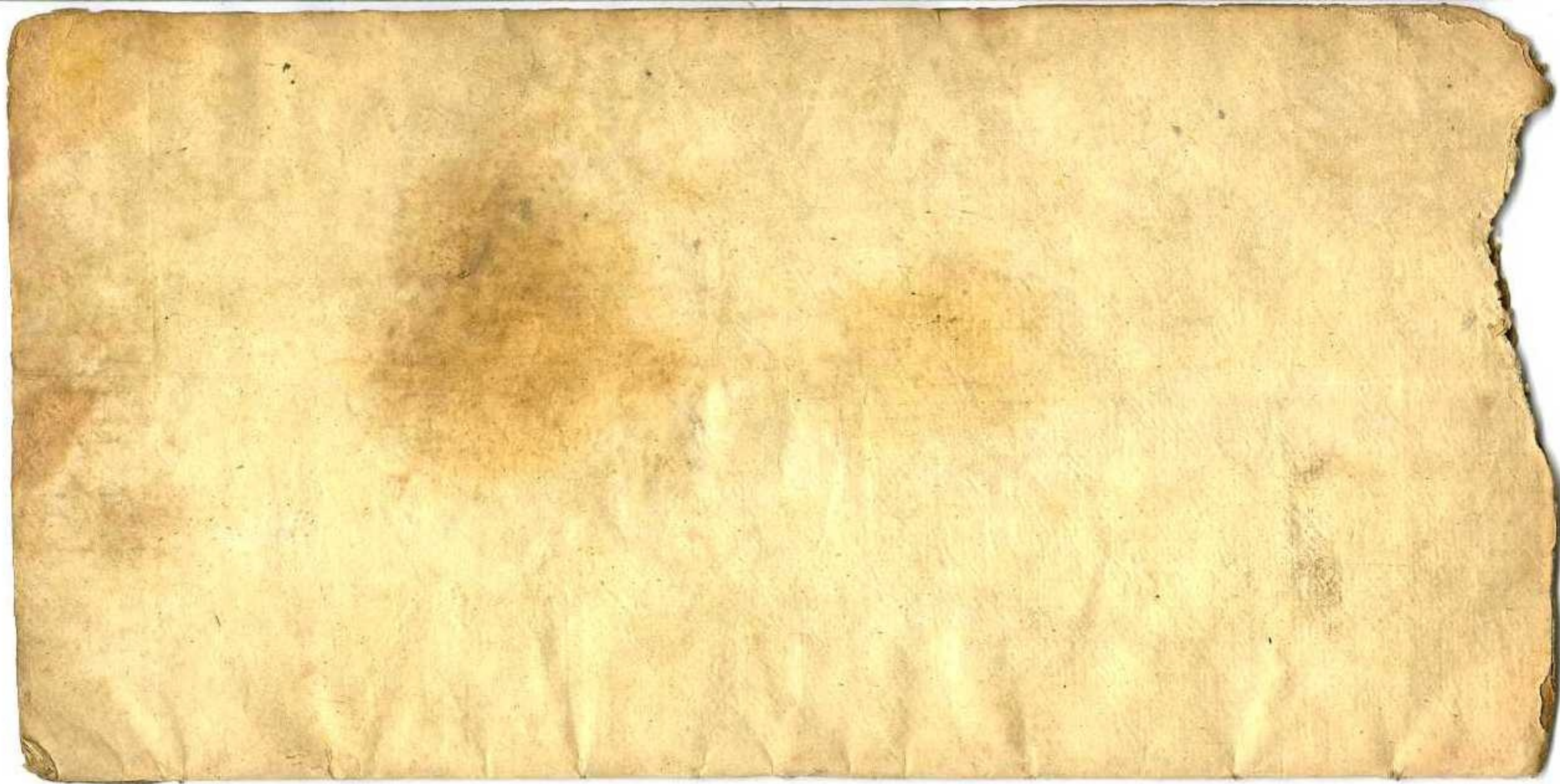














६७ वैष्णवी पूजा